IOSR Journal of Economics and Finance (IOSR-JEF)
e-ISSN: 2321-5933, p-ISSN: 2321-5925.Volume 12, Issue 6 Ser. II (Nov. – Dec. 2021), PP 01-04
www.iosrjournals.org

ग्रामीण आर्थिक विकास पर कृषि साख का प्रभाव अलीगढ़ जनपद के गंगीरी विकास खण्ड के संदर्भ में

सुशील कुमार
शोध छात्र, अर्थशास्त्र विभाग
डी0एस0 कालेज, अलीगढ़

डॉ0 मौहम्मद महमूद आलम
एसो0 प्रोफेसर (अर्थशास्त्र)
डी0एस0 कालेज, अलीगढ़

सारांश (Abstract)
ग्रामीण आर्थिक विकास पर कृषि साख का प्रभाव कृषि विकास के साथ–साथ ग्रामीण अर्थव्यवस्था के गैर कृषि क्षेत्र के विकास पर भी प्रभाव डालता है। कृषि साख के बहुआयामी प्रभाव पाये गये हैं। कृषि साख व ग्रामीण आर्थिक विकास के मध्य कुछ समस्या होते हुए भी यह सम्बन्ध धनात्मक पाया गया है। ग्रामीण आर्थिक विसा के विभिन्न आयाम – शिक्षा, साक्षरता, कृषि उत्पादन व उत्पादकता, कृषि में रोजगार व स्वरोजगार, ग्रामीण आय में वृद्वि, स्वास्थ्य व स्वास्थ्य सुविधाऐं, कौशल विकास, तकनीकी प्रयोग, वित्तीय संसाधनों की उपलबधता, संसाधनों का कुशलतम प्रयोग के साथ कृषि साख का अन्तर्सम्बन्ध है। ग्रामीण विकास के इन अवयवों का कृषि व्यवसाी से सीध सम्बन्ध है। कृषि साख का कृषि व्यवस्था पर प्रभाव पड़ते ही इन अवयवों पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक हो गया है।
अलीगढ़ जनपद के ग्रामीण परिवारों पर कृषि साख के पड़ने वाले प्रभावों में अन्तर अत्यधिक पाया गया है। ग्राम स्तर पर व साख की प्रकृति के आधार पर भी अन्तर पाया गया है। ग्रामीण विकास के तत्वों पर पड़ने वाले प्रभावों में वितरणात्मक प्रभाव काफी असमान पाया गया हैं जनपद में कृषि साख का ऋणात्मक प्रभाव नहीं पाया गया है जो कृषकों/ग्रामीणों का कृषि साख उपलब्ध कराने वाली वित्तीय संस्थाओं/बैंकों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को प्रदर्शित करता है।

संकेत शब्द (Abstract) : *: कृर्षि साख, ग्रामीण आर्थिक विकास, आर्थिक विकास, कृषि उत्पादकता*

Date of Submission: 10-11-2021 Date of Acceptance: 26-11-2021

प्रस्तावना (Introduction)

ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर कृषि साख का प्रभाव, कृषि विकास एवं ग्रामीण आर्थिक विकास के मध्य क्रियात्मक सम्बन्धों को प्रदर्शित करता है। ग्रामीण आर्थिक विकास एवं कृषि व्यवस्था एक दूसरे के पूरक हैं वही कृषि साख ग्रामीण आर्थिक विकास एवं कृषि विकास के मध्य पूरकता को मजबूती एवं एक नयी दिशा प्रदान करता है। शिक्षा–साक्षरता, उत्पादन–उत्पादकता, रोजगार–स्वरोजगार, स्वास्थ्य सुधार, आय वृद्वि, कौशल विकास एवं कार्यकुशलता की तकनीकी के मध्य कार्यात्मक सम्बन्धों को स्थापित करने में सहायता मिलती हैं भारत सरकार तथा उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा किसानों की उन्नति करने के लिए लगातार प्रयास किये गये हैं जिसके कारण कृषि साखा की महत्ता बढ़ जाती है। वर्तमान में कृषि विकास के सामने गरीबी, निम्न आय, बेरोजगारी जैसी समस्याओं के कारण कृषि साखा के प्रवाह एवं उपयोग स्तर में वृद्वि करना अत्यधिक महतवपूर्ण हो जाता हैं अलीगढ़ जनपद सहित उत्तर प्रदेश में ग्रामीण कृषि साख को तीन स्तरों पर उपलब्ध कराया जाता है।

1. अल्पकालीन साख – 15 माह की अवधि के लिए
2. मध्यकालीन साख – 15 माह से 5 वर्ष की अवधि के लिए
3. दीर्घकालीन साख – 5 वर्ष से 20 वर्ष तक की अवधि के लिए कृषि साख

कृषि व्यवस्था की बदलती प्रकृति एवं स्थानीय सामाजिक आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक व भौगोलिक प्रदत्तियों में अन्तर के कारण कृषि साख के ग्रामीण आर्थिक विकास पर अलग–अलग स्तर पर प्रभाव पाये जाते हैं।

शोध समस्या – प्रस्तुत शोध की शोध समस्या को निम्नवत स्पष्ट किया गया है– ग्रामीण आर्थिक विकास की मूल समस्या इस तथ्य पर निर्भर करती है कि कृषि आर्थिक विकास के सापेक्ष शहरी एवं आंशिक नगरीय अर्थव्यवस्था अत्यधिक तेजी से गतिमान है जो कृषि एवं ग्रामीण आर्थिक विकास के लिए समय–समय पर अनेक प्रकार से चुनौतियां खड़ी कती है। कृषि साख ग्रामीण आर्थिक विकास पर पड़ने वाले प्रभाव बहुआयामी एवं दीर्घकालीन भी हैं।

साहित्य का पुनः अवलोकन – प्रस्तुत शोध समस्या को अधिक स्पष्ट एवं तार्किक बनाने के लिए अनेक विद्वानों के आर्थिक साहित्य का अध्ययन किया गया है। सिंह पूनम (2002) कुमार भूपेन्द्र (2004), जालान विमल (2008), देवी गिरिजा (2008), कुमार महेन्द्र (2009), मिश्र सुप्रिया (2010), मीनाक्षी, आर0 (2012), जायसवाल सरिता (2012), शर्मा ममता (2012),

कुमार महेन्द्र (2018), सिंह कमल (2018) के ग्रामीण विकास एवं कृषि साख से सम्बन्धित साहित्य के विभिन्न पक्षों का अध्ययन किया गया।

शोध उद्देश्य – प्रस्तुत शोध के मुख्य उद्देश्य निम्नवत हैं।

1. अध्ययन क्षेत्र में ग्रामीण विकास एवं कृषि साख की नवीन प्रवृत्तियों का अध्ययन करना।
2. ग्रामीण अर्थव्यवस्था आर्थिक विकास पर कृषि साख के प्रभावों का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना – ''ग्रामीण विकास एवं कृषि साख के मध्य सकारात्मक अन्तर्सम्बन्ध है। कृषि साख का ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले वांछित तथा वास्तविक प्रभावों के मध्य अन्तर पाया जाता है।''

शोध विधि – प्रस्तुत शोध कार्य वर्तमान आर्थिक परिदृश्य को ध्यान में रखकर पूर्ण किया गया है। शोध कार्य उ0प्र0 के अलीगढ़ जनपद के गंगीरी विकास खण्ड से चयनित 10 ग्रामों को अध्ययन में शामिल किया गया हैं विकास खण्ड से 10 चयनित ग्राम निम्नवत है – लोधइ, खेरसा नगला, उम्मेदपुर, मौहकमपुर, डौरई, मलसई, पहाड़ीपुर, राजगहीला, फुसावली, रहमापुर।

प्रत्येक चयनित ग्राम से 20–20 परिवारों को अध्ययन में शामिल किया गया है। इस प्रकार चयनित निदर्शन का आकार 200 है। अध्ययन पद्धति में विश्लेषण की अन्वेषणात्मक विधि को अपनाया गया है। अध्ययन में प्राथमिक व द्वितीयक समंकों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक समंकों का संकलन अनुसूची विधि से किया गया हैं द्वितीयक समंकों का संकलन शोध पत्र, पत्रिका, सरकारी तथा अर्द्धसरकारी प्रतिवेदन से किया गया है।

ग्रामीण आर्थिक विकास के तत्व – अलीगढ़ जनपद में अध्ययन हेतु ग्रामीण आर्थिक के निम्न तत्वों अथवा अवयवों की पहचान की गयी है।

1. किसानों/ग्रामीणों की शिक्षा एवं साक्षरता का स्तर
2. कृषि में उत्पादन एवं उत्पादकता का स्तर एवं परिवर्तनों की दिशा
3. कृषि में रोजगार एवं स्वरोजगार की प्रवृत्ति, दिशा एवं परिवर्तनों का स्तर एवं कारण
4. ग्रामीण आय में वृद्वि सम्बन्धी कारक
5. ग्रामीणों के स्वास्थ्य का स्तर एवं ग्रामीण क्षेत्र में स्वास्थ्य सुविधाओं की स्थिति
6. ग्रामीण क्षेत्र में युवाओं में कौशल विकास का स्तर एवं उनकी अभिरूचि
7. कृषि उत्पादन एवं उत्पादकता बढ़ाने के लिए उपलब्ध संसाधनों के मध्य कुशलता के साथ समन्वयन स्थापित करना।
8. वित्तीय संस्थानों की व्यवस्था एवं संचालन
9. अन्य कारक/अवयव

ग्रामीण विकास के उपर्युक्त तत्व एक दूसरे के पूरक है इसीलिए इन तत्वों पर कृषि साख का प्रत्यक्ष तथा परोक्षरूप से प्रभाव पड़ता है। कृषि साख प्रत्यक्ष रूप से कृषि कार्यों तथा कृषि उत्पादन व उत्पादकता को प्रभावित करती है। कृषि उत्पादन व उत्पादकता का कृषि रोजगार व आय पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालती है जो कृषकों की पारिवारिक आर्थिक स्थिति को मजबूत करती हैं जो उनकी शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास, रहन–सहन तथा अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति को अनुकूल रूप से प्रभावित करती है।

ग्रामीण क्षेत्र में यह भी पाया जाता है कि कृषक कृषि कार्यों हेतु कृषि साख को स्वीकृत कराकर उसका एक भाग गैर–कृषि कार्यों में ही प्रयोग कर लेते हैं शेष भाग को ही कृषि कार्यों में प्रयोग कर पाते हैं जिसके कारण कृषि व्यवस्था पर वांछित प्रभाव नहीं पड़ता है तथा इसके साथ कृषि साख की पुनर्भुगतान की समस्या भी पैदा होती है। जिससे किसानों के सामने अनेक समस्याऐं पैदा होती हैं।

ग्रामीण कृषि साख – अलीगढ़ जनपद में कृषि साख का ग्रामीण आर्थिक विकास पर अलग दिश एवं स्तरों पर प्रभाव पड़ता है। जो अनेक प्रकार के स्थानीय संस्थागत तथा गैर संस्थागत व्यवस्थाओं से प्रभावित पाया गया हैं। कृषि साख के अल्पकालीन साख, मध्यकालीन साख तथा दीर्घकालीन साख के प्रभावों में काफी असमानता पायी गयी है। निम्न तालिका 1 में ग्रामीण कृषि साख से लाभान्वित परिवारों पर पड़ने वाली विभिन्न प्रभावों को प्रदर्शित किया गया हैं। निम्न तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि ग्राम स्तर पर पड़ने वाले प्रभावों में समानता है लेकिन ऋणों की प्रकृत्ति के प्रभावों में काफी असमानता पायी गयी है। अल्पकालीन साख से प्रभावित परिवारों तथा दीर्घकालीन ऋणों से प्रभावित परिवारों की संख्या में काफी अन्तर पाया गया है।

तालिका 1
ग्रामीण कृषि साख से लाभान्वित परिवार

क्र.सं0	ग्राम	चयनित परिवार	कृषि साख से लाभान्वित परिवार (आवृत्ति)		
			अल्पकालीन साख	मध्यकालीन साख	दीर्घकालीन साख
1.	लोघई	20	15	3	1
2.	खेरसा नगला	20	13	4	1
3.	उम्मेदपुर	20	13	4	2
4.	मौहकमपुर	20	14	2	2
5.	डौरई	20	15	4	4

6.	मलसई	20	18	5	4
7.	पहाड़ीपुर	20	16	7	3
8.	राजगहीला	20	13	4	2
9.	फुसावली	20	15	8	4
10.	रहमापुर	20	16	6	5
	योग	200		43	28

तालिका 2.I
जनपद में व्यवसायिक बैंकी स्थिति (2018–19)

बैंक	संख्या
राष्ट्रीयकृत बैंक शाखाऐं	191
अन्य	55
ग्रामीण बैंक शाखाऐं	85
सहकारी बैंक शाखाऐं	13
सहकारी कृषि एवं ग्राम्य विकास बैंक की शाखाऐं	08
प्रति लाख जनसंख्या पर प्रारम्भिक कृषि ऋण समितियों की संख्या	2.99

स्रोत : जिला साख्यिकीय पत्रिका, अलीगढ़, 2018–19

तालिका 2.II
अलीगढ़ जनपद के गंगीरी विकास खण्ड में वित्तीय संस्थान

वर्ष	प्रति व्यावसायिक बैंक शाखा पर जनसंख्या
2010–21	32475.00
2017–18	20767.31
2018–19	20767.31

स्रोत : जिला साख्यिकीय पत्रिका, अलीगढ़, 2018–19

उपर्युक्त तालिका 2.I व 2.II के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि अलीगढ़ जनपद में राष्ट्रीयकृत बैकों की कुल शाखाऐं 191 हैं तथा अन्य बैंकों की शाखाऐं 55 है। कुल ग्रामीण बैंकों की शाखाऐं 85 है। प्रति लाख जनसंख्या पर प्रारम्भिक कृषि ऋण समितियों की संख्या 2.99 हैं जनपद के गंगीरी विकास खण्ड में प्रति व्यवसायिक बैंक शाखा वर्ष 2018–19 में जनसंख्या 20767.31 थी।

कृषि साख के प्रभाव – अलीगढ़ जनपद के गंगीरी विकास खण्ड से चयनित ग्रामीण परिवारों पर कृषि साख के प्रभावों के ग्रामीण आर्थिक विकास के विभिन्न अवयवों पर प्रदर्शित करने का प्रयास निम्न तालिका 3 में किया गया हैं निम्न तालिका में उच्च प्रभाव, मध्यम प्रभाव, निम्न प्रभाव, शून्य प्रभाव तथा ऋणात्मक प्रभावों को दर्शाया गया हैं निम्न तालिका में दर्शाये गये परिवारों की आवृत्ति है क्योंकि एक किसान पर कृषि साख का बहुआयामी प्रभाव पाया गया हैं

तालिका 3

क्र.सं0	विकास के तत्व	चयनित परिवार	परिवार संख्या (कृषि साख के प्रभाव का स्तर)				प्रतिकूल	योग
			उच्च–1	मध्यम–2	निम्न–3	प्रभाव नहीं		
1.	आय का स्तर	20	13	6	1	0	0	20
2.	रोजगार/ स्वरोजगार	20	12	5	3	–	0	20
3.	शिक्षा	20	3	6	8	3	0	20
4.	स्वास्थ्य	20	5	6	4	5	0	20
5.	आवास	20	5	4	6	5	0	20
6.	रहन–सहन	20	8	3	3	6	0	20
7.	यातायात व्यवस्था	20	13	3	2	2	0	20
8.	कृषि उपकरण	20	18	1	1	0	0	20
	अन्य	100	77	34	28	21	0	100

उपर्युक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि प्रत्येक ग्राम से चयनित 20–20 परिवारों पर कृषि साख के पड़ने वाले प्रभावों की प्रवृत्ति अधिक पायी गयी है निम्न प्रभावों की स्थिति का स्तर अत्यन्त कम है। प्रतिकूल प्रभावों वाले परिवारों की संख्या शून्य पायी गयी है। ग्रामीण आर्थिक विकास पर कृषि साख का प्रभाव बहुआयामी पाया गया है।

निष्कर्ष – प्रस्तुत शोध से प्राप्त निष्कर्ष निम्न प्रकार हैं।

1. अलीगढ़ जनपद में कृषि साख का कृषि व्यवस्था के साथ ग्रामीण आर्थिक विकास पर भी प्रत्यक्ष तथा परोप रूप से प्रभाव पड़ा है क्योंकि कृषि शाख का अर्थव्यवसाी पर प्रभाव एक दिशीय न होकर बहुदिशीय पाया गया हैं।
2. अलीगढ़ जनपद में कृषि साख के प्रतिकूल प्रभाव नहीं पाये गये हैं और न ही कृषि साख प्रभावहीन स्थिति में पाया गया है।
3. शोध परिकल्पना सत्य सिद्व हुई है।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. कुमार, महेन्द्र एवं गोपाल स्वरूप शर्मा (2018) भारतीय कृषि अर्थशास्त्र, सनराइज पब्लिकेशन, दिल्ली।
2. कुमार एवं शमां (2017) ग्रामीण विकास के तत्व, सनराइज पब्लिकेशन, दिल्ली।
3. गोविल, आर0के0 एवं दयाल (2014) कृषि अर्थशास्त्र, लक्ष्मी नारायण आगरा।
4. त्रिवेदी एवं शुक्ला (2012) रिसर्च मैथ्योडोलॉजी, रिसर्च पब्लिकेशन्स, त्रिपोलिया बाजार, जयपुरं
5. अखिलेश एस0 एवं संध्या शुक्ल (2010) भारत में ग्रामीण विकास, गायत्री पब्लिकेशन विछिया–रीवा, म0प्र0
6. यूनुस मुहम्मद (2008) गरीबों का बैंकर, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।
7. कपिल, एच0के0 (2001) अनुसंधान विधिया – व्यवहारपरक विज्ञानों में, एच0पी0 भार्गव बुक हाउस, कचहरी घाट, आगरा।
8. योजना – प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, नई दिल्लीं
9. कुरूक्षेत्र – प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, नई दिल्लीं
10. वार्ता – भारतीय आर्थिक शोध संस्थान, प्रयागराज (इलाहाबाद)
11. समाज विज्ञान शोध पत्रिका, स्टार प्रिंटिंग प्रेस अमरोहा (जे0पी0 नगर)
12. The Indian Economic Journal
13. UPUEA Economic Journal